International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 29-05-2020; Accepted: 16-06-2020; Published: 01-07-2020
Volume 2; Issue 3; 2020; Page No. 01-02

वैष्विक पटल पर भारतीय संस्कृति एवं मानव मूल्य

अनिता पाटीदार
सहायक प्राद्यापक (अतिथि विद्वान), हिन्दी साहित्य, शासकीय महाविद्यालय शामगढ़, मध्य प्रदेश, भारत

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति संसार की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक रही है जो अमरत्व लिये हुए हैं जहाँ अन्य संस्कृतियों में उदाहरण बेबोलिनियन, सुमेरियन, मेसोपोटामिया आदि के ध्वंसावशेष की गाथा बची है, वहीं भारतीय संस्कृति सदियों से आने वाले थपेड़ों को सहते हुए आज भी खड़ी हैं।

भारतीय संस्कृति कालक्रम की एक कड़ी रही है जिसका इतिहास विस्तृत है, विलक्षण भौगोलिक दशाएँ हैं, सिन्धुघाटी सभ्यता से प्रारम्भ होकर वैदिक युग में फली–फुली और क्रमशः विकसित होती चली गई। भारतीय संस्कृति अपने आप में अनोखी रही है, अनेकता में एकता इसकी मूल विषेषता है। साहित्य मूल्य और संस्कृति व्यापक विषय हैं। मानव मूल्य भारतीय संस्कृति की पहचान है। विरासत में मिली अनमोल धरोहर है। मूल्य सच्चे अर्थो में उदात्त और सात्विक जीवन का आधार होते हैं। इसमें जीवन्तता है किस भी राष्ट्र की भौतिक संरचना को उसका शरीर कहा जा सकता है किन्तु उसके रक्त संचार मानव मूल्यों से ही होता है।

भारतीय संस्कृति विष्व में सर्वश्रेष्ठ, सर्वमंगलमयी, सर्वजनकल्याणकारी आदि अनन्त और शाष्वत है। भारतीय संस्कृति सात्विक मूल्यों से संस्कारित सभी के हृदय में आपसी प्रेमभाव व उच्च विचारों को संजोना इसका मूल मंत्र है।

भारतीय संस्कृति 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' की भावना लिये है जो विष्व बंधुत्व व शान्ति का संदेष देती है। साहित्य और संस्कृति विष्व कल्याण के लिये कार्य करने का संदेष देते हैं। स्वामी विवेकानन्द जी ने 'आत्मनो मोक्षार्थम्, जगत् हिताय च'। आनन्द सूत्र के इस वाक्य के माध्यम से कहा कि हमारी भावनाएँ ऐसी हों जो स्वयं का उद्वार करें व लोककल्याण करे।

भारतीय संस्कृति में निष्काम कर्म, परोपकार, सत्य की राह, समानता की भावना, प्रेम, राष्ट्र भावना, विष्व बंधुत्व आदि को प्रदानता दी गई है। भारतीय संस्कृति को समझने के लिये साहित्य की आवष्यकता पड़ती है और साहित्य के साथ ही संस्कृति खड़ी हो जाती पर जहाँ संस्कृति का नाम लेते हैं वहाँ साहित्य स्वतः उपस्थित हो जाता है और जहाँ संस्कृति है वहाँ मानव है और वहाँ उसकाल के सुलझे–उलझे मानव मूल्य किसी न किसी प्रकार विद्यमान रहते हैं। संस्कृति मूल्य को और मूल्य संस्कृति को प्रभावित किये बिना नहीं रहते। संस्कृति एक धारा है जो अलग–अलग क्षेत्रों के मूल्यों से प्रभावित होती रहती है। संस्कृति कोई भी हो उसके माध्यम से देश, काल, समाज का चरित्र मुखर होता है जहाँ मानव मूल्य इसे एक आधार प्रदान करते हैं। भारतीय संस्कृति ने भारत के अलावा विदेशों में भी अपना आलोक फैलाये रखा है।

मानव मूल्य व संस्कृति की यात्रा साथ–साथ रहती हैं। किसी समय, काल की संस्कृति उस समय के आदर्श, संस्कार, रीति–रिवाज, आचार–विचार आदि के माध्यम से मनुष्य के जीवन को दर्शाती हैं याने संस्कृति के पदयात्रा मानव मूल्य की भी यात्रा है।

भारतीय संस्कृति बहुरंगी संस्कृति है। विभिन्न रंगों याने भिन्न–भिन्न भाषा, जाति, धर्म, परम्परा, रीति–रिवाज, रहन–सहन, कला आदि के योग से बनी है। भारतीय संस्कृति काश्मीर से कन्याकुमारी, सम्पूर्ण भारत को अपनी ओर आकर्षित करती है। भारतीय संस्कृति उस महाकुंभ के समान है जहाँ विभिन्न संस्कृतियाँ, मानव मूल्य उसमें गोता लगाकर उसकी अखण्डता और गौरव को और भी बढ़ाते हैं। मानव मूल्य इस पवित्रता को, नैतिकता को बरकरार रखने में सबसे अहम् भूमिका निभाते हैं। चारित्रित पवित्रता, नैतिकता, निष्ठा, कर्तव्यपरायण की भावना, मानव प्रेम आदि से ही कोई राष्ट्र चिरंतन काल तक अविच्छिन्न रह सकता है अतः मानव मूल्यों ने संस्कृति विरासत का प्रतीक बन कर विश्व पटल पर विश्व धर्म में भारतीय संस्कृति को नई पहचान दी।

मानव मूल्य संस्कृति को अक्षुण्ण रखने के लिये अमोघ अस्त्र हैं। मानव मूल्य सार्वभौमिक मूल्य है। ये समाज, मानव के भीतर व्यवहार्य जीवन की नींव होते हैं जिससे उसके जीवन की इबादत लिखी जा सकती है जो मानवता को स्थापित करती हैं। मानव मूल्य जैविक, सामाजिक, आध्यात्मिक हो सकते हैं।

भारतीय संस्कृति धर्मनिरपेक्ष है तथा यहाँ प्रकृति पूजा का विशेष महत्व होता है। जल, वायु, अग्नि, पशु (गाय) पहाड़

आदि को विशेष स्थान प्रदान है और मानव मूल्यों में पवित्रता, सत्यता, सौन्दर्य, सुसंगति, सुकर्म, प्रेम, न्याय, कश्षलता आदि मानवीय मान, आदर्श हैं। जिसके आधार पर मानव का मूल्यांकन विभिन्न परिस्थितियों में किया जाता है जो एक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि भी है। मूल्य हमारे सांस्कृतिक सिद्धांतों, आदर्शों को नियंत्रित करते हैं तथा जीवन के उद्देष्यों और उन्हें प्राप्त करने के साधनों को स्पष्ट करते हैं। इन्हीं मूल्यों के माध्यम से भारतीय संस्कृति की महानता परिलक्षित होती हैं।

मानव मूल्य तथा संस्कृति आंतरिक सामंजस्य स्थापित कर विश्व में विस्तार करने की कोशिश करती हैं और इससे बाह्य सामंजस्य प्राप्त किया जा सकता है। यही मूल्य सरलता, उदारता, लचीलापन, परोपकार, अहिंसा, अन्त्योदय आदि भारतीय संस्कृति का संतुलित दृष्टिकोण व लोककल्याण के प्रति तथा विश्व कल्याण की ओर झुकाव दिखाते हैं।

भारतीय संस्कृति 'वसुदेव कुटुम्बकम' एवं 'सर्वधर्म, समभाव' पर पूरा विष्वास रखती है जहाँ सुबह मन्दिर की आरती, मस्जिद की अजान, गुरूद्वारे से शबद कीर्तन की आवाज, चर्च से प्रार्थना जैसी अनेक ध्वनियाँ एकसाथ सुनी जाती हैं। त्यौहार में देखें तो होली, दिवाली, क्रिसमस, ईद, मोहरम आदि साथ–साथ मनाये जाते हैं। इतना ही नहीं अलग–अलग धर्म, सम्प्रदाय द्वारा मजारों पर चादर चढ़ाना, गुरूद्वारे पर मत्था टेकना, चर्च में प्रार्थना करना, मन्दिर में पूजा करना आदि भारतीय संस्कृति में धार्मिक श्रद्धा का जीता–जागता उदाहरण है। भिन्न–भिन्न उत्सवों, मेलों, त्यौहारों, तीर्थ स्थलों, कलाओं, कला दृष्यों, संगीत, नृत्यों, प्रकृति पूजा, गहने, कपड़ों, शादियों, परम्पराओं आदि में इतनी विविधता होने के बावजूद एकजूटता है और भारतवासी अपनी इस बहुरंगी संस्कृति पर गर्व महसूस करते हैं। ऋषियों, मुनियों, वेद, पुराण, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, गीता, कुरान, यमुना, गंगा, गीता आदि संस्कृति का एक हिस्सा है। इसी आधार पर कह सकते हैं कि भारतीय मानव मूल्य अनन्त है, भारतीय संस्कृति गाथा अनन्त है। भारतीय संस्कृति ने अनेक विपदाओं को सहा है, अनेक विदेषी आक्रमण ने इसे मिटाने की कोषिष की और नाकाम भी रहे।

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है दुष्मन दौरे जहाँ हमारा। इकबाल

भारतीय संस्कृति एवं मानव मूल्य हमें यह सीख देते हैं जो इस श्लोक से स्पष्ट भी होते हैं

सर्वे भवन्तुः सुखिनः
सर्वे सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणी पष्यन्तु
मा कष्चिद दुःख भाग भवेत्।

हमारी संस्कृति में आदर्ष वाक्य ''सत्य मेव जयते'' है वहीं 'वसुदेव कुटुंबकम अतिथि देवो भव; जैसी भावनाएँ हमारे रगों में व्याप्त हैं। भले ही स्वयं भूखे रह लें किन्तु अतिथि का सत्कार करना धर्म है।

हमारे भारतीय मूल्य, ज्ञान–विज्ञान का वह मंथन है जिसमें जितना गहरे पैठते हैं उतने ही मोती हमें प्राप्त होते जायेंगे और यही कारण है कि आज भी विष्व स्तर पर भारतीय संस्कृति को विष्व धरोहर का दर्जा भी विष्व समुदाय ने प्रदान किया है जो गौरव का विषय भी है।

कुछ मात्रा में सभ्यता और संस्कृति के अवमूल्यन होने से मानव मूल्यों में परिवर्तन आया है। वैदिक काल में मानव मूल्य की कल्पना आदर्षवादी रही वहीं वर्तमान काल में परिस्थितियाँ बदल रही हैं। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, पुरूषार्थ तो ज्यों के त्यों हैं किन्तु उनके सम्बन्ध में धारणाएँ एवं मंथव्य बदल रहे हैं। अपने–अपने युग की विसंगतियों और विडम्बनाओं को देखकर मानव मूल्यहीनता का अनुभव भी होता है किन्तु सम्पूर्ण विष्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि मूल्यों की प्रतिष्ठा ही संस्कृति के आदर्ष हैं। संस्कृति मूल्याधीन होती हैं। मानव मात्र का दायित्व बनता है कि वह संस्कृति एवं मानव मूल्य के सम्बन्ध को समझे, बेश कीमती धरोहर को संवारे और संरक्षण करे।

सम्पूर्ण विश्व में भारतीय संस्कृति की पहचान एक मुकुटमणि की तरह है। कई वार सहने के बाद भी भारतीय संस्कृति कभी नहीं हारी, हमेशा से कायम रही और रहेगी।

भारतीय संस्कृति का केनवास विशालतम् है जिसमें हर तरह के रंग और फूल खिले हैं उनमें जीवन्तता है जो सदियों से परोपकार, सहिष्णुता, अहिंसा का पाठ पढ़ाती आई है और आज भी यह सब इसकी विशेषता है।

धन्य हैं भारतीय संस्कृति है हमारी
जिसे ऋषि, मुनि, ज्ञानियों ने जानी,
गूंझती हैं वेद, पुराण, उपनिषद् की वाणी,
बहती हैं जिसमें गंगा–यमुना,
सम्मान सब धर्मों को मिलता,
ऐसा गौरव सिर्फ भारतीय संस्कृति को ही मिलता।

संदर्भ सूची

1 ज्ञानचंन्द्र शर्मा, भारतीय संस्कृति का एक पक्ष, दैनिक ट्रिब्यून समाचार 13सितंबर 2016
2 वाचस्पति गैरोला, भारतीय संस्कृति और कला, उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान,लखनउ
3 डॉ रमेश पोखरियाल,निशंक भारतीय संस्कृति सभ्यता एवं परम्परा प्रकाशन डायमंड बुक्स नई दिल्ली
4 श्यामचरण दुबे, मानव और संस्कृति, राजकमल प्रकाशन दिल्ली
5 डॉ सुकेश शर्मा, भारतीय संस्कृति में मानव मुल्य एवं लोक कल्याण
6 बाबु गुलाबराय, भारतीय संस्कृति की रूपरेखा, रवीन्द्र प्रकाश, पाटनकर बाजार, ग्वालियर